पत्रिवर्तित जीवन मूल्यों के संदर्भ में साठोत्तरी हिंदी की हास्य व्यंग्य कविताओं का मूल्यांकन

अपने एम.ए. के अध्ययन काल से ही में हिंदी के व्यंग्यकारों की रचनाएं पढ़ती रही हूँं। अन्य विद्वानों की अपेक्षा मुझे व्यंग्य लेखन में अधिक सार्थकता तथा चित्रण के अनेक विस्तार अनुभव हुए हैं। विशेषकर हरिशंकर परसाई, शरद जोशी तथा लतिक घोषी तथा झान चतुरबेदी के व्यंग्य लेखन ने मुझे प्रभावित किया साथ ही हास्य रचनाएं भी प्रभावित करती रहीं।

सन् 2001 में बुन्देलखंड यूनिवर्सिटी से एम.ए. करने के बाद मुझे बड़ोदा रहना पड़ा अपनी व्यंग्य पाठ्य रूचि के कारण मेरा साक्षात्कार म.स. विश्वविद्यालय बड़ोदा के शीर्ष डॉ. भगवानदास कहार से हुआ। मैंने जब व्यंग्य और हास्य में अपनी रूचि प्रदर्शित करते हुए पी.एच.डी. की जिज्ञासा यथा की तो उन्होंने तुरंत अपने निर्देशन में मेरा पंजीकरण कर दिया और मैंने कार्य भी प्रारंभ कर दिया।

संयोगवश कुछ परिवारिक व्यवस्थाओं के कारण शोधकार्य में विलम्ब हुआ और डॉ. कहार सेवा निवृत्त भी हो गए, मेरा शोध कार्य पूर्ण रूप से रुक गया।

बाद में वर्तमान हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विष्णु बिराट चतुरबेदी से मैं मिली और उन्होंने मेरा अनुरोध स्वीकार करके मुझे मार्गदर्शन देने का दायित्व स्वीकार कर लिया।
मैंने बड़े मनोयोग से डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के निर्देशण में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया और उन्हों के कुशल निर्देशन के कारण आज मेरा यह शोध कार्य सम्पन्न हो सका है।

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में सभी विधाओं का प्रारम्भ तथा विकास हुआ। सभी विधाओं पर अनेक शोध कार्य हुए परन्तु हास्य-व्यंग्य साहित्य कुछ उपेक्षित-सा रहा गया। इस विषय पर बहुत कम शोध कार्य हुए। वैसे तो कभी के युग से ही हास्य-व्यंग्य का विकास होता रहा है। शुरू से ही हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में हास्य-व्यंग्य का विकास छलपूर्ण रूप में होता आया है परन्तु स्वतंत्रता के बाद हास्य-व्यंग्य काव्य लेखन स्वतंत्र रूप से विकसित होने लगा।

आज हास्य-व्यंग्य का अपना अलग क्षेत्र बन गया है और इस विषय पर शोध कार्य करने की मेरी बहुत इच्छा थी। हास्य-व्यंग्य साहित्य की व्यापकता को समेटना बहुत कठिन कार्य लगा। परन्तु गिरजाचार कर में लगे रहकर डॉ. विष्णु विराट चतुर्वेदी के निर्देशण से पूर्ण हो सका सम्पन्न प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में हास्य-व्यंग्य विषय के शास्त्रीय अध्ययन पर प्रकाश डाला गया है।
हास्य-व्यंग्य परिभाषा, उत्पत्ति, भारतीय तथा पश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से परिभाषा;
स्वरूप हास्य-व्यंग्य के तत्त्व आदि को स्पष्ट किया गया है।

द्वितीय अध्याय में हास्य-व्यंग्य काव्य की धारा को परिवर्तित मानव मूल्यों के तहत विवेचित करके विवेचना दृष्टिकोण को विस्तार से प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय में हास्य-व्यंग्य काव्य के प्रमुख हस्ताक्षरों का परिचय दिया है।

चतुर्थ अध्याय में हास्य-व्यंग्य रचनाओं में राजनैतिक दृष्टिकोण को देखते हुए।
राजनैतिक प्रभाव, विसंगतियों और विद्वंद्वों को उजागर किया है।

पंचम अध्याय में सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक क्षेत्र में फैली हुई असमानताओं
और अवस्थाओं को हास्य-व्यंग्य काव्य के द्वारा स्वर्णीय संदर्भ में विवेचना प्रस्तुत की गई है।

षष्ठ अध्याय में आर्थिक, शैक्षणिक और साहित्यिक क्षेत्र में फैली विषमताओं को
हास्य-व्यंग्य काव्य के द्वारा स्पष्ट किया गया है।
सत्तम अध्याय में हार्स्य-व्यंग्य काव्य में भाव एवं कलापक्षीय वैशिष्ट्य को स्पष्ट किया गया है।

अष्टम अध्याय में मूल्यांकन किया गया है तथा उपर्युक्त समायोजित है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए मुझे आवश्यक सामग्री महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ीदाद और लखनऊ विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों और जीवन प्रभात प्रकाशन गुम्बई, हिन्दी साहित्य निकेतन जिज्ञासू एवं सार्थक प्रकाशन दिल्ली, साहित्य संगम इलाहाबाद आदि स्थानों से प्राप्त हुई जिसके सहयोग के लिए मैं आमरी हूं।

इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे पुरुष डॉ. विष्णु विराट चुकबेदी हिन्दी विभागाध्यक्ष महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ीदाद का पूर्ण निर्देशन प्राप्त हुआ और विभाग के डॉ. भगवानदास कहार, डॉ. शैलजा भारद्वाज आदि का सहयोग मिलता रहा। मैं इसकी आमरी हूं।

इस शोधकार्य को पूरा करने और हमेशा प्रत्याशाहन देने में मेरे पिता डॉ. सनेश चन्द्र खरे मैं श्रीमती मनोरमा खरे का प्रोत्साहन मिलता रहा। इनके लिए मैं सदैव आमरी रहूँगी। मेरे छोटे भाई प्रकाश चन्द्र खरे, दीपेश खरे और घर के सभी सदस्यों का हमेशा सहयोग रहा। मेरी शादी होने के बाद इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरे सपूर्वकल के सदस्यों ने और मेरे पति ने हमेशा पर्याप्त सहयोग दिया है। उनके लिए मैं उनकी चिर अभिषेक हूं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध सर्वथा मौलिक स्थापनाओं एवं विषयों से सम्पर्क है। मैंने अनेक अधिकारी विधायता तथा सहयोगी युवा संरचना में जनाकारी प्राप्त की है। प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में तिन-तिन साहित्यकारों तथा अधिकारियों का सहयोग मुझे मिला है मैं उन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता जापित करती हूं।

- करुणा खरे